सुरभि

हिन्दी विभाग

2024-2025

प्राचार्य का संदेश

सर्वप्रथम, मैं सुरभि - 2024-25 के प्रकाशन हेतु हिंदी विभाग का हार्दिक अभिनंदन करती हूँ। विभाग निरंतर विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन कर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। महाविद्यालय की साहित्यिक गतिविधियों में इसकी सक्रिय सहभागिता सराहनीय है।

विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमताओं को निखारने के उद्देश्य से हिंदी विभाग द्वारा प्रतिवर्ष संपादित पत्रिका 'सुरभि' एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। यह न केवल छात्रों को सृजनात्मक लेखन के लिए प्रेरित करती है, बल्कि उनके साहित्यिक अभिव्यक्ति को भी सशक्त बनाती है।

मैं हिंदी विभाग के इस उत्कृष्ट प्रयास की सराहना करती हूँ और महाविद्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देती हूँ।

डॉ. अर्चना पत्की
प्राचार्य

संपादक मंडल

संपादक

डॉ. प्रशांत देशपांडे

संपादकीय सदस्य

डॉ संदेशा भावसार

डॉ वृषाली चौघुले

कु. सानिका सालुंखे

कु. ज़ेबा शाह

संपादकीय

महाविद्यालय का हिन्दी विभाग सदैव विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमताओं के संवर्धन हेतु तत्पर रहा है। विभाग प्रत्येक वर्ष भाषिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का आयोजन कर विद्यार्थियों को अपनी अभिव्यक्ति के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करता है। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए 'सुरभि' पत्रिका की शुरुआत की गई, जिससे न केवल इन गतिविधियों का दस्तावेजीकरण हो सके, बल्कि विभागीय शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को सृजनात्मक लेखन के लिए भी प्रेरित किया जा सके।

पिछले दो वर्षों से प्रकाशित 'सुरभि' पत्रिका को जिस प्रकार प्रशंसा एवं प्रोत्साहन प्राप्त हुआ है, वह हमारे लिए अत्यंत उत्साहवर्धक है। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए 'सुरभि - 2024-2025' का यह विशेषांक प्रस्तुत किया जा रहा है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह संस्करण भी अध्यापकों एवं विद्यार्थियों की सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त करेगा और उनकी सृजनशीलता को एक नई दिशा प्रदान करेगा।

इस प्रयास को सफल बनाने में जिन सभी महानुभावों ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपना अमूल्य सहयोग दिया, हम उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। विशेष रूप से, हम महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. अर्चना पत्की का हृदय से आभार प्रकट करते हैं, जिनका सतत प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन हमें इस कार्य को और अधिक उत्कृष्ट रूप में प्रस्तुत करने की प्रेरणा देता है।

सादर धन्यवाद!

डॉ. प्रशांत देशपांडे

अनुक्रमणिका

1. माँ - सानिका सालुंखे (कविता)

2. भारत की बेटियाँ - सुनीता श्रवण यादव (कविता)

3. जीवन की डोर - नैन्सी शर्मा (कविता)

4. अधूरे ख्वाब - ज़ेबा शाह (कविता)

5. स्त्री सुरक्षा : चुनौतियाँ एवं समाधान - सेजल जैसवार (लेख)

6. असफलता से सफलता - साज़िदा परवीन (लेख)

7. करिश्माई कलाम - सानिका सालुंखे (पुस्तक समीक्षा)

8. पर्यावरण एवं विकास - लकी लेडिया (लेख)

9. आत्मविश्वास की शक्ति - कु फ़लक कुरैशी (पेंसिल स्केच)

8. हिन्दी विभाग की साहित्यिक गतिविधियाँ

9. हिन्दी विभाग के अध्यापक एवं छात्र द्वारा प्रकाशित संदर्भ ग्रंथ

"किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसकी मातृभाषा के सम्मान और उसके प्रचार-प्रसार पर निर्भर करती है।"

"यदि भारत को सशक्त बनाना है, तो हमें अपनी भाषा, अपने ज्ञान और अपनी संस्कृति पर गर्व करना होगा।"

"जो अपनी भाषा और संस्कृति को भूल जाता है, वह अपनी पहचान खो देता है।"

"युवाओं को चाहिए कि वे अपनी मातृभाषा और संस्कृति को अपनाकर राष्ट्र निर्माण में योगदान दें।"

स्वामी विवेकानंद

"यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं, तो केवल एक व्यक्ति शिक्षित होता है; लेकिन यदि आप एक स्त्री को शिक्षित करते हैं, तो संपूर्ण परिवार और समाज शिक्षित होता है।"

"समाज की सच्ची प्रगति तब होगी जब स्त्रियों को भी समान शिक्षा और अवसर मिलेंगे।"

"महिला शिक्षा केवल समाज सुधार का साधन नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र निर्माण की नींव है।"

"एक शिक्षित महिला न केवल अपने जीवन को संवारती है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों का भी मार्गदर्शन करती है।"

महर्षि धोंडो केशव कर्वे

कुंवर नारायण की सुंदर कविता
अन्तिम ऊँचाई

कितना स्पष्ट होता आगे बढ़ते जाने का मतलब
अगर दसों दिशाएँ हमारे सामने होतीं,
हमारे चारों ओर नहीं।
कितना आसान होता चलते चले जाना
यदि केवल हम चलते होते
बाक़ी सब रुका होता।

मैंने अक्सर इस ऊलजलूल दुनिया को
दस सिरों से सोचने और बीस हाथों से पाने की
कोशिश में
अपने लिए बेहद मुश्किल बना लिया है।

शुरू-शुरू में सब यही चाहते हैं
कि सब कुछ शुरू से शुरू हो,
लेकिन अन्त तक पहुँचते-पहुँचते हिम्मत हार जाते हैं।
हमें कोई दिलचस्पी नहीं रहती
कि वह सब कैसे समाप्त होता है
जो इतनी धूमधाम से शुरू हुआ था
हमारे चाहने पर।

दुर्गम वनों और ऊँचे पर्वतों को जीतते हुए
जब तुम अन्तिम ऊँचाई को भी जीत लोगे—
जब तुम्हें लगेगा कि कोई अन्तर नहीं बचा अब

तुममें और उन पत्थरों की कठोरता में
जिन्हें तुमने जीता है—
जब तुम अपने मस्तक पर बर्फ़ का पहला तूफ़ान
झेलोगे
और काँपोगे नहीं—
तब तुम पाओगे कि कोई फ़र्क़
नहीं सब कुछ जीत लेने में
और अन्त तक हिम्मत न हारने में।

माँ

सारे विश्व से न्यारी है माँ
सारी खुशियां देती है माँ
चलना हमें सिखाती है माँ
मंजिल हमें दिखाती है माँ
विश्व की मीठी बोली है माँ
लोरी सुनाकर सुलाती है माँ
संसार में सबसे अनमोल है माँ
मुश्किलों से हँसकर लड़ना
सिखाती है माँ
अनोखी दुनिया हमें दिखाती है माँ
सारे विश्व से न्यारी है माँ

सानिका सालुंखे
प्रथम वर्ष

मातृदेवो भव।
अर्थात्
माता को देवता समान मानो।
तैत्तिरीय उपनिषद

भारत की बेटियाँ

ख्वाबों से निकलकर आज,
हकीकत में गूंज रही है
देखो भारत की बेटियाँ
आसमान को चूम रही है आज,
देखो भारत की बेटियाँ
गर्भ में जिसने मारा बेटी को देखो,
आज कैसा गमगीन है
होठों की हंसी उनकी
आंसुओं में विलीन है
खुद आगे बढ़ती है
सौगात सभी को देती है
ख्वाब सभी को देती है
सूरज की तेज है उसमें
हर राह डग भर रही है
खुद के आत्मविश्वास से
विश्वास सभी को दे रही है
ख्वाबों से निकलकर आज,
हकीकत में गूंज रही है
देखो भारत की बेटियाँ
आसमान को चूम रही है आज,
देखो भारत की बेटियाँ

सुनीता श्रवण यादव, प्रथम वर्ष

जीवन की डोर

निराशा में भी आशा है
साँसों की डोर बँधी है
जीवन की डोर से
ये डोर है जीवन की आस
और जीवन पूरी प्यास है
प्यास वो है जो कभी बूझती नहीं
जीवन वो है जो इच्छाओं की आस
इच्छाएँ कभी नहीं होती है खत्म
जैसे एक सांस के बाद दूसरी
वैसे ही इच्छाओं की जीवन जीने की आस
ये डोर और आस
जहां न हो वहां
जीवन का कोई मोल नहीं
इसलिए जीवन की जितनी लंबी डोर होगी
उतनी ही जीने की आस होगी

नैन्सी शर्मा , तृतीय वर्ष

अधूरे ख्वाब

शाम भी दल गई, रात भी गुजर गई
सुरज भी निकला,और शाम फिर से हो गई।
न आया समझ कि, अब क्या है करना,
कैसे अधूरे ख्वाब को पूरा है करना।
मैं भागती रहीं अपने सपनों के पिछे,
वक्त रेत की तरह, फिसल कर गिर गया निचे।
अपने ही पीठ पर वार करते रहें खंजर से,
मोहब्बत की आड़ लेकर,
लोग खेलते रहे दिल से।

जहाँ हम ठहरते, वहां महफिल सजा देते थे,
लोग हमें महफिल की जान बुलाते थे।
मैं लफ्जों की झूठी मिठास में गुम होती गई,
जब पलट कर देखा तो, खुद कहीं खो गई।

रोइ बहुत अपनी किस्मत पर, हाया! ये कैसे हो गया,
जो हासिल किया था, वो सब कैसे खो गया।
दिल जोरों से हंसा और मुस्कुरा कर बोला,
अरे पागल वो तो सब था, तेरी नज़रों का धोका।
मैंने दिल की एक न सुनी, लगी पलटने बीते लम्हों के पन्ने
और देखा कि, हर लम्हा मुझ पर लगा हंसने।
बहुत मायूस हुई, टूट कर बिखर भी गई,कुछ लम्हें के लिए,
लेकिन फिर ये खुद से अहद किया,
सारे बिते हुये लम्हों के पन्नों को फाड़ कर जला दिया।
कि खुद को अब इन झूठे लोगों से,झूठे वादों से बचाऊंगी,
और अपने आप को एक कामियाब इंसान बनाऊँगी।
कल फिर नई सुबह होगी, नई शाम आयेगी,
और जिन्दगी यूँ हीं हंसते खेलते गुजर जायेगी।

ज़ेबा शाह
एम ए हिन्दी प्रथम वर्ष

स्त्री सुरक्षा: चुनौतियाँ और समाधान

स्त्री सुरक्षा समाज के समग्र विकास से जुड़ा एक महत्वपूर्ण विषय है। महिलाएँ घर, कार्यस्थल और सार्वजनिक स्थानों पर विभिन्न तरह की चुनौतियों का सामना करती हैं, जिनमें शारीरिक, मानसिक और साइबर अपराध शामिल हैं। इनमें से कई घटनाएँ रिपोर्ट तक नहीं हो पातीं, जिससे समस्या और गंभीर हो जाती है। महिलाओं की शिक्षा, आत्मनिर्भरता और कानूनी जागरूकता की कमी भी उनके सशक्तिकरण में बाधा बनती है।

इस समस्या के समाधान के लिए कानूनों को सख्ती से लागू करने, न्याय प्रक्रिया को सरल बनाने और महिलाओं को आत्मरक्षा के लिए प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। महिलाओं को शिक्षा और रोजगार के समान अवसर देकर आत्मनिर्भर बनाना जरूरी है, जिससे वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो सकें और किसी भी अन्याय के खिलाफ आवाज उठा सकें। साथ ही, समाज में महिलाओं के प्रति सम्मान और समानता का भाव विकसित करने के लिए सांस्कृतिक बदलाव जरूरी है।

स्त्री सुरक्षा केवल महिलाओं का नहीं, बल्कि पूरे समाज का दायित्व है। जब महिलाएँ सुरक्षित और सशक्त होंगी, तभी समाज वास्तविक प्रगति कर सकेगा। इसके लिए सरकार, न्याय प्रणाली और प्रत्येक नागरिक को मिलकर सकारात्मक बदलाव लाने होंगे, जिससे एक सुरक्षित और समानतापूर्ण समाज का निर्माण हो सके।

सेजल पारसनाथ जैसवार
द्वितीय वर्ष

असफलता से सफलता

मुस्कान ने सातवीं तक की पढ़ाई हँसते-खेलते पूरी की, लेकिन आठवीं में नए स्कूल का माहौल और अंग्रेज़ी में पढ़ाने वाली समरीन टीचर के कारण उसे मुश्किलें आने लगीं। सुबह जल्दी उठने की आदत न होने से वह अक्सर देर से पहुंचती, जिससे टीचर उसे डांटती और दोस्त भी उससे दूर रहने लगे। धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास कम होने लगा, और स्कूल जाना बोझ लगने लगा। परीक्षा के समय टीचर ने उसे फेल होने की चेतावनी दी, लेकिन जैसे-तैसे वह नौवीं में पहुँच गई।

नौवीं और दसवीं में भी वही माहौल रहा, पर दसवीं में उसने ठान लिया कि वह मेहनत करेगी। पेरेंट्स मीटिंग में जब टीचर ने उसकी माँ से कहा कि वह फेल हो जाएगी, तो माँ ने पूरा विश्वास दिखाया। यह बात मुस्कान के दिल में घर कर गई। उसने मेहनत की और 50% अंकों से परीक्षा पास की। कॉलेज में नया माहौल मिला, अच्छे दोस्त बने और सहायक टीचर मिलीं, जिन्होंने उसका आत्मविश्वास बढ़ाया। उनकी प्रेरणा से वह प्रतियोगिताओं में भाग लेने लगी और मंच पर बोलने का डर दूर हो गया।

12वीं में 60% अंक हासिल कर उसने खुद पर भरोसा पा लिया। फिर वकालत की पढ़ाई की और समाज के लिए काम करने लगी। लोग उसे 'वकील मुस्कान' कहकर पुकारने लगे। उसकी कहानी सिखाती है कि असफलता केवल एक पड़ाव है, लेकिन आत्मविश्वास और मेहनत से सफलता पाई जा सकती है।

साजिदा परवीन
तृतीय वर्ष

पुस्तक समीक्षा
"करिश्माई कलाम"

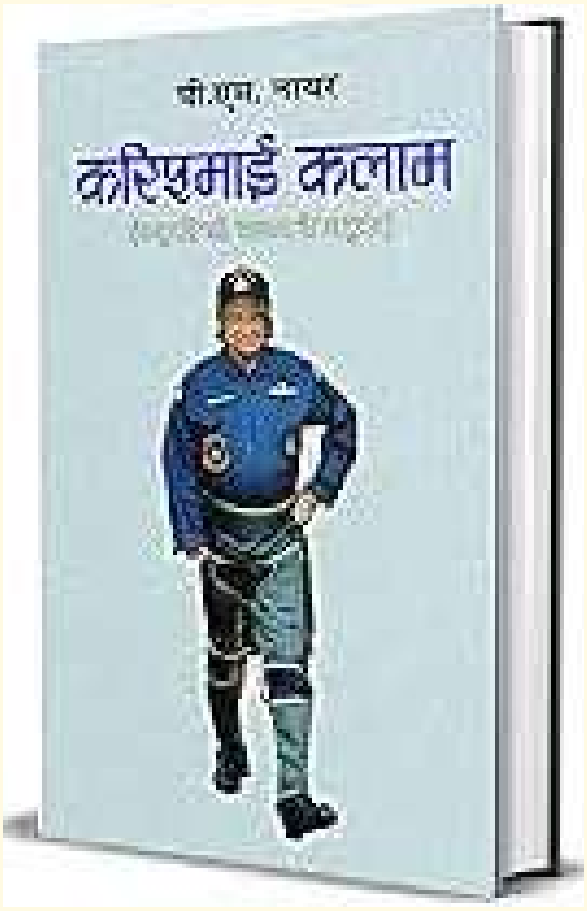

'करिश्माई कलाम' एक प्रेरणाजन्य पुस्तक हैं, जो भारत के पूर्व राष्ट्रपति और महान वैज्ञानिक डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की जीवनी, विचार, कड़ी मेहनत और उनके संघर्ष की कहानी इस पुस्तक में लिखी है। यह पाठकों को प्रेरित करती है। उनकी सफलता को सरल तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक के लेखक पी.एम. नायर है। यह पुस्तक 2008 में प्रकाशित हुई।

डॉ. कलाम की जीवनी के अतुल्य पहलुओं को इस पुस्तक में चित्रित किया गया है, जिसमें उनकी बचपन की कठिनाइयां, शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उनके योगदान को भी शामिल किया गया हैं। पुस्तक में उनके जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं को सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया हैं। जो कि ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक हैं। उनकी प्रेरणादायक कहानी और विचार पाठकों को सकारात्मक सोच की ओर प्रोत्साहित करती हैं। उनके योगदान के प्रमुख पल और भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के विकास में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका को भी लेखक ने स्पष्ट किया है। डॉ. कलाम ने भारतीय विज्ञान को विश्व फ़लक पर खड़ा करने में किस तरह अपना योगदान दिया, उसका भी उल्लेख किया है। इस पुस्तक में डॉ. कलाम की शिक्षा के माध्यम से पाठकों का यह समझने में मदद मिलती हैं कि सफलता कड़ी मेहनत और ईमानदारी से संभव हैं। लेखन ने डॉ. कलाम के नेतृत्व की शैली, नैतिक मूल्य और उनके नागरिकों के प्रति आत्मसमर्पण को एक उत्तेजक दृष्टिकोण से दर्शाया गया है।

डॉ. कलाम की जीवनी में प्रदर्शित उनकी कड़ी मेहनत, ईमानदारी, उनका संघर्ष और समाज के प्रति जिम्मेदारी की भावना पाठकों को अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरणा देती हैं। इसे पढ़कर हर आयुवर्ग के पाठक जीवन यात्रा को समझ सकते हैं और स्वयं अपने जीवन में सफलता की राह पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित हो सकते हैं।

सानिका सांलुंखे
प्रथम वर्ष

"जो युवा अपनी मातृभाषा और संस्कृति के साथ आधुनिक विज्ञान और तकनीक को जोड़ेंगे, वे भारत को विश्वगुरु बना सकते हैं।"

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

न

पर्यावरण एवं विकास

विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। हालांकि हर विकास के अपने सकारात्मक और नकारात्मक नतीजे होते हैं। लेकिन जब नागरिकों के लाभ के लिए विकास किया जा रहा हो, तो पर्यावरण का ख्याल रखना भी उतना ही जरूरी है। अगर पर्यावरण की परवाह किए बिना ही विकास कार्य किया गया, तो पर्यावरण पर इसके नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न होंगे|

पर्यावरण और आर्थिक विकास एक दूसरे से परस्पर जुड़े हुए है। जिस तरह देश की आर्थिक तरक्की पर्यावरण को प्रभावित करती है, उसी तरह पर्यावरण संसाधनो में गिरावट भी आर्थिक विकास को प्रभावित करता है। ऐसे कई सारी पर्यावरण नीतियां है, जिन्हें अपनाकर हम अपने पर्यावरण को भी बचा सकते हैं और अपनी आर्थिक उन्नति भी सुनिश्चित कर सकते हैं। आर्थिक विकास एक देश की उन्नति के लिए बहुत आवश्यक है। एक देश तभी विकसित माना जाता है, जब वह अपने नागरिकों को पर्याप्त मात्रा में रोजगार मुहैया करवा पाये। जिससे वहां के निवासी गरीबी से छुटकारा पाकर एक अच्छा जीवन व्यतीत कर सके। इस तरह का विकास आय में असमानता को कम करता है। जितनी ज्यादा मात्रा में एक देश आर्थिक तरक्की करता है, उसके राजस्व कर में भी उतनी ही वृद्धि होती है। सरकार की बेरोजगारी और गरीबी से जुड़ी कल्याण सेवाओं के खर्च में उतनी ही कमी आती है।

पर्यावरण एक देश की आर्थिक उन्नति में बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक राष्ट्र के विकास का बड़ा हिस्सा विभिन्न क्षेत्रों में उत्पादन से जुड़ा होता है। प्राकृतिक संसाधन जैसे कि पानी, जीवाश्म ईंधन, मिट्टी आदि की उत्पादन के विभिन्न क्षेत्रों में आवश्यक होता है। हालांकि उत्पादन के परिणामस्वरूप पर्यावरण द्वारा प्रदूषण का भी अवशोषण होता है। इसके अलावा उत्पादन के लिए संसाधनों के ज्यादा इस्तेमाल की वजह से पर्यावरण में संसाधनों की कमी की समस्या भी उत्पन्न हो जाती है।

प्राकृतिक संसाधनों के लगातार हो रहे उपभोग तथा बढ़ते प्रदूषण स्तर के कारण पर्यावरण संसाधनो की गुणवत्ता खराब हो जायेगी, जिससे ना सिर्फ उत्पादन की गुणवत्ता प्रभावित होगी। बल्कि इसके उत्पादन में लगे मजदूरों में भी तमाम तरह की स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न होगी और इसके साथ ही यह उनके लिए काफी हानिकारक सिद्ध होगा, जिनके लिए यह बनाया जा रहा है।

आर्थिक विकास का आंनद लेने के लिए यह काफी जरूरी है कि हम पर्यावरण संसाधनों के संरक्षण को विशेष महत्त्व दे। पर्यावरण और आर्थिक विकास के मध्य संतुलन स्थापित करना काफी आवश्यक है। इस प्रकार से प्राप्त हुई तरक्की का आनंद ना सिर्फ हम ले पायेंगे, बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियां भी उससे लाभान्वित होगी।

सतत् विकास की अवधारणा 1987 में बनी बुटलैंड कमीशन से ली गयी है। इस कमीशन के अनुसार सतत् विकास वह विकास है, जिसके अंतर्गत वर्तमान की पीढ़ी अपनी जरूरतों को पूरा करे, साथ ही संसाधनों की पर्याप्त मात्रा में सुरक्षा सुनिश्चित करें। जिससे आने वाले समय में भविष्य की पीढ़ी की मांगों को भी पूरा किया जा सकता है। 2015 के यूनाइटेड नेशन सतत् विकास शिखर सम्मेलन (यू.एन. सस्टेंटेबल डेवलपमेंट समिट) में विश्व प्रमुखों ने सतत् विकास के लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित किए है।

विकास हमारी जरूरतों को पूरा करने के लिए होता है। यह हमें घर देता है, जिसमें हम रहते हैं। यह हमें कपड़े देता है, जिनसे हम पहनते है। यह हमें शिक्षा देता है, जिससे हम ज्ञान प्राप्त करते हैं। विकास हमें सुखी और समृद्ध जीवन जीने में मदद करता है।

पर्यावरण हमारे जीवन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। यह हमें ऑक्सीजन देता है, जिससे हम साँस लेते हैं। यह हमें पानी देता है, जिससे हम पीते है। यह हमें खाना देता है, जिससे हम जीते हैं। पर्यावरण हमें स्वस्थ रखने में मदद करता है और हमें प्राकृतिक सौंदर्य प्रदान करता है।

पर्यावरण और विकास दोनों एक दूसरे से जुड़े हुए है। विकास के लिए हमें पर्यावरण की जरूरत होती है। अगर हम पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते हैं, तो विकास भी प्रभावित होता है। हमें पर्यावरण को बचाने के लिए काम करना चाहिए और विकास के लिए भी प्रयास करना चाहिए।

लकी लेडिया
द्वितीय वर्ष

यह एक बेहतरीन पेंसिल स्केच है, जिसमें एक एनीमे कैरेक्टर को बहुत ही डिटेलिंग के साथ उकेरा गया है प्रथम वर्ष की छात्रा कु फ़लक कुरैशी ने । आर्टवर्क में उन्होंने कैरेक्टर की बॉडी स्ट्रक्चर, एक्सप्रेशन और हेयर स्टाइल पर खास ध्यान दिया है।

इमेज आत्मविश्वास और शक्ति को दिखा रही है ..

"कला केवल रंग और रेखाओं का मिश्रण नहीं, बल्कि
आत्मा की अभिव्यक्ति है।"

हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित साहित्यिक गतिविधियां एवं उपलब्धियां

विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन

दिनांक 17 जनवरी 2025 को विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर ऑनलाइन अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया था| इस व्याख्यान में टोक्यो विदेशी अध्ययन विश्वविद्यालय, जापान के हिन्दी विभाग के विजिटिंग प्रोफेसर डॉ ऋषिकेश मिश्र ने विद्यार्थियों को 'हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य' विषय पर मार्गदर्शन किया| उन्होंने व्याख्यान में वैश्विक स्तर पर हिन्दी के बढ़ते हुए महत्व एवं रोजगार की स्थिति पर प्रकाश डाला| उन्होंने भारतीय नई पीढ़ी को भारतीय भाषा, साहित्य एवं मूल्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टि से सोचने की आवश्यकता को रेखांकित किया|

हिन्दी सप्ताह- 2024

हिन्दी विभाग द्वारा 14 सितंबर हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी सप्ताह- 2024 का आयोजन किया गया गया| इस अवसर पर निबंध प्रतियोगिता, वक्तृत्व स्पर्धा, काव्य पाठ एवं लोकगीत प्रस्तुतीकरण, अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया |

हिन्दी विभाग द्वारा
बालसुधार गृह, डोगरी
विस्तार गतिविधि
17 मार्च, 2025

व्याख्यान का आयोजन

शनिवार, दिनांक –18 जनवरी, 2025 को
डॉ माधवी साठे मैडम का विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया है..।
विषय – Eating Right for Healthy Life!

हिन्दी विभाग के अध्यापक एवं छात्र द्वारा प्रकाशित संदर्भ ग्रंथ

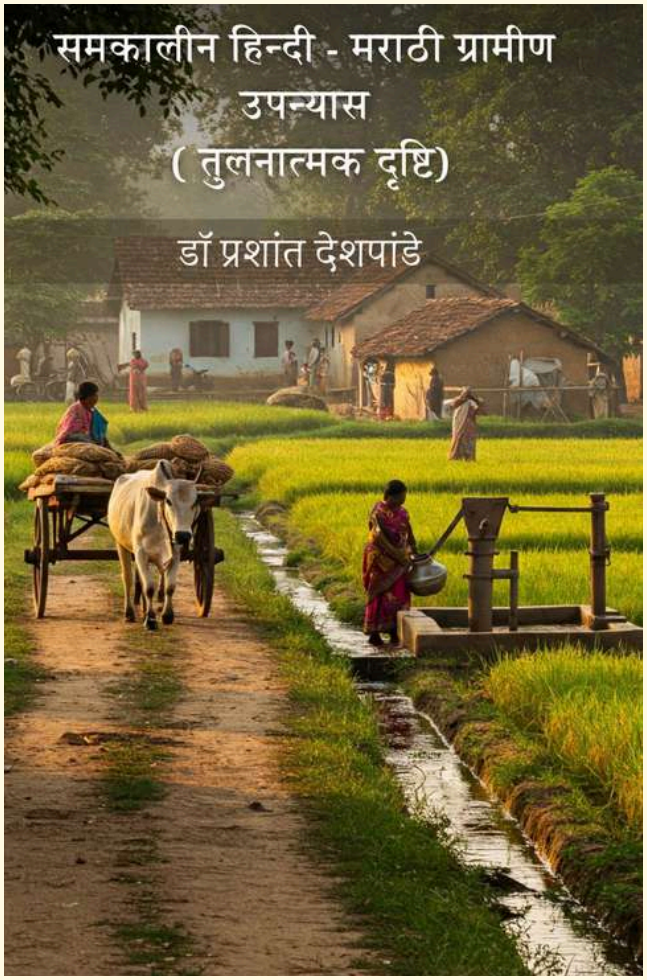

समकालीन हिन्दी-मराठी ग्रामीण उपन्यास (तुलनात्मक दृष्टि)
डॉ प्रशांत देशपांडे

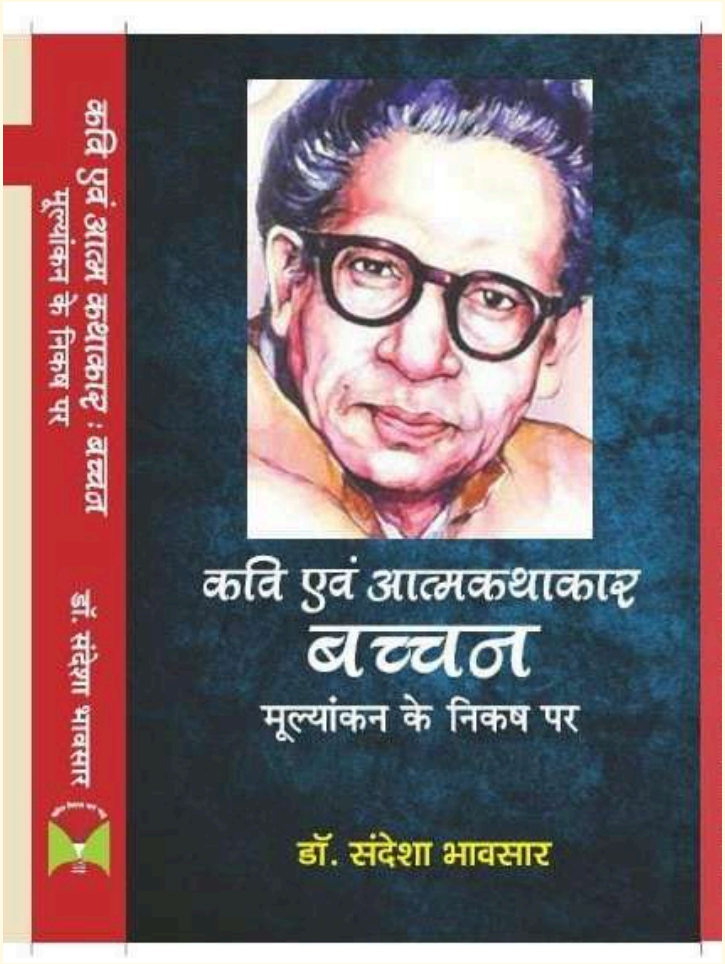

कवि एवं आत्मकथाकार बच्चन मूल्यांकन के निकष पर
डॉ संदेशा भावसार

एक और द्रोणाचार्य : एक मूल्यांकन - लक्ष्मी जायसवाल (स्नातकोत्तर छात्र)

डॉ संदेशा भावसार एस एन डी टी विश्वविद्यालय के गुजराती विभाग द्वारा अतिथि व्याख्यान हेतु आमंत्रित

बंधनों में रहूँ, पर उड़ान रहे,
सपनों में सदा एक जान रहे।
नभ को झुकाने की चाह न हो,
मुझे खुद को पाने की राह रहे।

धन्यवाद ..